पाठ्यपुस्तकों का दायरा बढ़ाकर, सोच का दायरा बढ़ाना

साची खण्डपुर

पाठ्य (text) की परिभाषा करते हुए हम कह सकते हैं कि इससे हमें ऐसी प्राथमिक या द्वितीयक सूचना मिलती है जो किसी विषय विशेष के अध्ययन में सहायक होती है। संयुक्त राज्य अमरीका के कॉलेज में मुझे अपनी पहली कुछ कक्षाओं में यही बात पढ़ाई गई थी। यह सुनकर मैं तो भ्रम में पड़ गई क्योंकि भारत में स्कूली शिक्षा के दौरान मुझे सिखाया गया था कि पाठ्य का सम्बन्ध केवल पाठ्यपुस्तकों से है। ऐसी पाठ्यपुस्तक जिसका अनुसरण किसी विशेष पाठ्यक्रम के अध्ययन में मानक के रूप में किया जाए। मुझे बड़ा आश्चर्य होता था क्योंकि कॉलेज में मेरी अधिकांश कक्षाओं में किसी भी पाठ्यपुस्तक का उपयोग नहीं किया जाता था। मुझे देखने के लिए फ़िल्में, पढ़ने के लिए भाषण और आत्मसात करने के लिए कहानी व गद्य लेखों की पुस्तकें दी जाती थीं। मैं इस बात से बिल्कुल अपरिचित थी कि इस प्रकार की सामग्री किसी कोर्स के शिक्षण-अधिगम में यदि अधिक नहीं तो उतनी ही प्रभावी हो सकती है।

मुझे तो इस बात की आदत थी कि पाठ्यपुस्तक से कुछ पढ़कर सुना दिया जाए और यह कहा जाए कि मेरे उत्तर पाठ्यपुस्तक की सामग्री से मेल खाते हुए होने चाहिए वरना मैं अकादमिक रूप से कुशल नहीं मानी जाऊँगी। पाठ्यपुस्तक की जानकारी सही मानी जाती थी, भले ही वह पुरानी और अप्रचलित हो। उदाहरण के लिए बारहवीं कक्षा में उद्यमिता की पाठ्यपुस्तक में हमें कम्पनी अधिनियम 1956 के बारे में पढ़ाया गया था। हमें बताया गया था कि हमें अधिनियम के सभी प्रावधानों को याद रखना होगा। हमें यह कभी नहीं सिखाया गया कि इस अधिनियम की जगह पर कम्पनी अधिनियम 2013 लागू हो चुका है। कक्षा में प्राप्त ज्ञान अप्रचलित और अनुपयुक्त था क्योंकि विद्यार्थियों को प्रामाणिक और उपयोगी ज्ञान देने से अधिक महत्त्वपूर्ण इस बात को माना जाता था कि पाठ्यपुस्तक का पालन किया जाए।

मेरा मानना है कि शिक्षा के शुरुआती चरणों में पाठ्यपुस्तकें बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। वे एक ऐसी रूपरेखा प्रदान करती हैं जिसके भीतर शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अनुदेश देते हैं। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों को कक्षा में सिखाई गई सामग्री को अधिक आसानी से सीखने में सक्षम बनाती हैं क्योंकि सामग्री को बेहतर ढंग से सीखने के लिए इनको सन्दर्भ बिन्दु के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसके बावजूद मुझे लगता है कि पाठ्यपुस्तकों को बेहतर ढंग से संरचित किया जाना चाहिए। उपर्युक्त उदाहरण में यदि पाठ्यपुस्तक को नए अधिनियम के विशोधन के बाद सम्पादित कर दिया जाता तो वह आज की वास्तविकताओं के लिए अधिक प्रासंगिक होती। इस बात को शायद पाठ्यपुस्तकों की समयबद्ध समीक्षाओं द्वारा सुनिश्चित किया जा सकता है जिससे कि यह सुनिश्चित हो सके कि अप्रचलित सामग्री के स्थान पर अधिक प्रामाणिक जानकारी दे दी गई है।

मेरा यह भी मानना है कि निरर्थक जानकारी पर विद्यार्थियों की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए। उदाहरण के लिए मेरी बारहवीं कक्षा की राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में 1989 के बाद बनी गठबन्धन सरकारों और सम्बन्धित प्रधानमंत्रियों का एक फ्लो-चार्ट (प्रवाह तालिका) दिया गया था। उस वर्ष की बोर्ड परीक्षा के प्रश्नपत्र में इस फ्लो-चार्ट के लिए चार अंक निर्धारित थे। अगर आगे चलकर हममें से कोई भी राजनीतिक, वैज्ञानिक और नीति-निर्माता बने तो हमें इस जानकारी से मदद मिलेगी कि सरकार की किसी प्रणाली विशेष के विभिन्न फ़ायदे और नुक़सान क्या हैं, न कि इससे कि हमारे जन्म से एक दशक पहले कौन प्रधानमंत्री था। पाठ्यपुस्तकें तभी सहायक होती हैं जब वे हमारे समय की वास्तविकताओं को दर्शाएँ।

इसके साथ ही यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि पाठ्यपुस्तक एकमात्र ऐसी सामग्री नहीं है जो हमारे समय की वास्तविकताओं को दर्शाती है। फ़िल्म, डॉक्यूमेन्ट्री, लेख, भाषण और सोशल मीडिया

प्लेटफ़ॉर्म जैसे अन्य माध्यम भी हैं जिनका उपयोग शिक्षण के तरीक़ों के रूप में किया जा सकता है। अधिकांश विद्यार्थी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में अपने आस-पास और विश्व स्तर पर होने वाली घटनाओं के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिए इन स्रोतों का उपयोग करते हैं। इसलिए शिक्षा अधिक प्रभावी तब होगी जब विद्यार्थियों को उन तरीक़ों के माध्यम से पढ़ाया जाए जिन्हें वे स्वयं सक्रिय रूप से खोजते हैं। हो सकता है कि किसी टॉक शो में किसी प्रासंगिक मुद्दे पर एक हास्य अभिनेता की टिप्पणी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हो जितनी कि एक पाठ्यपुस्तक में विशिष्ट रूप से दर्शाए गए उसी मुद्दे के आँकड़े। ये तरीक़े विद्यार्थियों को उस मुद्दे के बारे में बहु-सांस्कृतिक और बहु-आयामी परिप्रेक्ष्य विकसित करने में सक्षम कर सकते हैं।

पढ़ाने का कोई भी तरीक़ा विलग रूप से इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। हर तरीक़े के अपने अनूठे फ़ायदे और कमियाँ हैं। प्रत्येक विधि की कमियों को कम किया जा सकता है, यहाँ तक कि किसी अलग विधि का उपयोग पूरक के रूप में करके उसे पूरा भी किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों का तनाव कम होगा जो हमारे देश की व्यापक समस्या है। मीडिया और प्रिंट के विविध रूपों का उपयोग करने से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि विद्यार्थियों में थकान कम हो और जानकारी को आत्मसात करना तनावपूर्ण होने की बजाए एक आनन्ददायक गतिविधि बन जाए।

एक हद तक शायद शिक्षकों को भी पाठ्यक्रम निर्धारित करने की थोड़ी अधिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। पाठ्यक्रम और कोर्स की अवधि के दौरान किया जाने वाला कोई भी परिवर्तन विशेषज्ञों और शिक्षकों के एक बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए। इससे क्षेत्रीय वास्तविकताओं और विभिन्नताओं के हिसाब से पाठ्यपुस्तक का अधिक लचीले तरीक़े से उपयोग हो सकेगा। आख़िरकार, किसी भी जानकारी की प्रासंगिकता उस क्षेत्र पर निर्भर करती है जहाँ इसका उपयोग किया जाता है। पाठ्यपुस्तक के भीतर ही एक अन्य विकल्प उपयोगी साबित हो सकता है। उदाहरण के लिए, बारहवीं कक्षा की उद्यमिता की पाठ्यपुस्तक में व्यवसाय स्थापित करने वाले अनुभाग में मुम्बई शहर को लेकर विशिष्ट जानकारियाँ दी गई थीं। दिल्ली में रहने वाली मुझ जैसी विद्यार्थी के लिए इन जानकारियों का कोई वास्तविक महत्त्व नहीं था। इसलिए पाठ्यपुस्तक में देश के सभी महानगरीय शहरों में व्यवसाय स्थापित करने के बारे में जानकारी शामिल की जानी चाहिए थी, जिससे विद्यार्थियों को अपने क्षेत्र के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक तरीक़ों का अध्ययन करने का विकल्प मिल सके या फिर इस तरह के अनुभाग को पूरी तरह से समाप्त कर दिया जाना चाहिए था। काम के इस तरह के बोझ का कोई मतलब नहीं है जिसका भविष्य में कोई उपयोग न हो।

मेरी पढ़ाई पारम्परिक प्रणाली में हुई जिसमें कोर्स का अध्ययन करने के लिए मैंने केवल कक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया। इस प्रणाली का यह फ़ायदा था कि मेरे सहपाठियों और मैंने कभी चिन्ता नहीं की क्योंकि हमें पता था प्रत्येक प्रश्न पाठ्यपुस्तक से ही पूछा जाएगा। और इसमें ख़राबी भी यही थी : हमने यह चिन्ता नहीं की कि हमें वास्तव में कुछ समझ आया बस, पाठ याद कर लें – यही काफ़ी था। हम जानते थे कि हमें बहुत अधिक आलोचनात्मक चिन्तन में नहीं उलझना है। यह बात कॉलेज की संरचना के एक़दम विपरीत रही : वहाँ याद करने के लिए बहुत कम या कोई सामग्री नहीं होती। हर चीज़ के बारे में पढ़ना, देखना और सुनना होता है और उसका आलोचनात्मक विश्लेषण करना होता है। इससे हमें विचार-विमर्श करने और कक्षा की चर्चाओं में विविध दृष्टिकोण लाने की स्वतंत्रता मिलती है, जो सभी की सोच के दायरे को व्यापक करती है, जिसमें प्राध्यापक भी शामिल हैं और शायद यह बात सबसे महत्त्वपूर्ण है।

साची खण्डपुर मैसाचुसेट्स के पायनियर वैली में माउण्ट होलिओक कॉलेज में बैचलर ऑफ़ आर्ट्स प्रोग्राम के प्रथम वर्ष की छात्रा हैं। उन्होंने 2018 में दिल्ली पब्लिक स्कूल, नोएडा से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। उनसे khand22s@mtholyoke.edu पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** प्रीति मिश्रा **कॉपी एडिटर :** ज्योति चौरड़िया